संत और संघ

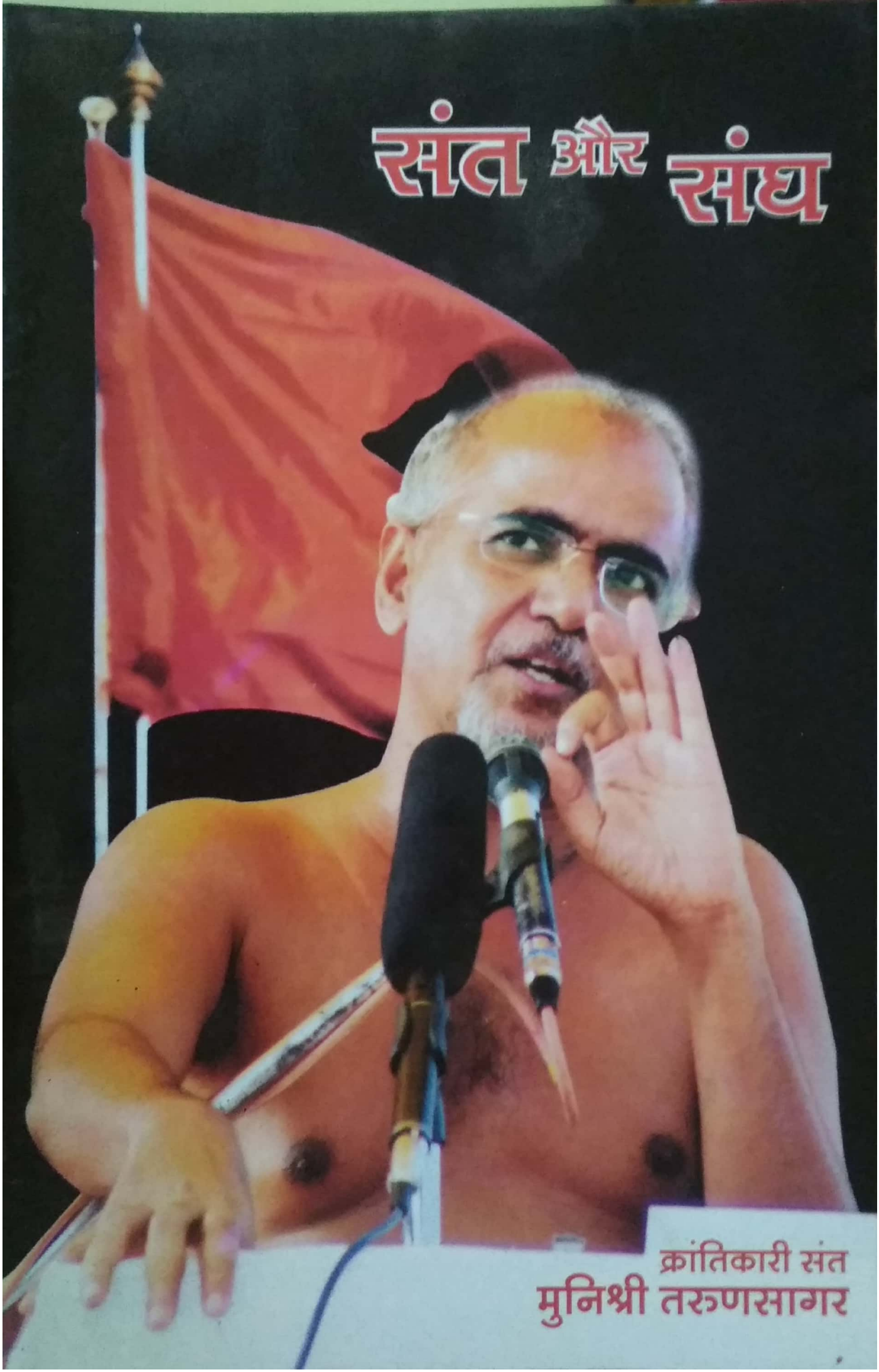

क्रांतिकारी संत
मुनिश्री तरुणसागर

Scanned by CamScanner

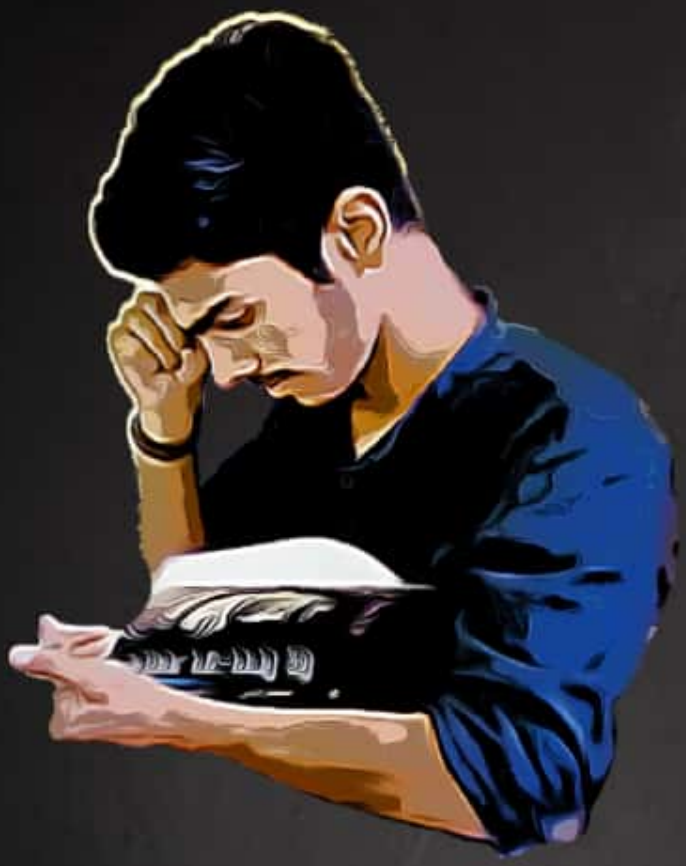

ये PDF Telegram से डाउनलोड की गयी हैं।

Telegram पर E-समिधा(Books) चैनल जॉइन कर के अन्य पुस्तको की PDF प्राप्त कर सकते हैं।

ई-समिधा
Telegram

Scanned by CamScanner

संत और संघ

28 सितम्बर, 2009 को नागपुर के रेशमबाग मैदान में
आरएसएस द्वारा विजया-दशमी पर आयोजित मुख्य पथ संचलन में
सम्मिलित स्वयं-सेवकों को दिया गया सम्बोधन

क्रांतिकारी राष्ट्र संत
मुनिश्री तरुणसागरजी

तरुण क्रांति मंच ट्रस्ट (रजि.)
70, डिफेन्स एन्क्लेव, विकास मार्ग, दिल्ली-92

Scanned by CamScanner

सौजन्य संविभाग

तरुण क्रांति मंच ट्रस्ट, दिल्ली

चतुर्थ संस्करण : अक्टूबर, 2013
प्रतियाँ : 10,000
कुल प्रतियाँ : 15,000

संत और संघ

मुनिश्री तरुणसागर

© तरुण क्रांति मंच ट्रस्ट (रजि.), दिल्ली-92

अहिंसा महाकुंभ प्रकाशन
196, सेक्टर-18, फरीदाबाद (हरियाणा)
फोन : 0129-2262549

मुद्रक : पॉपुलर प्रिन्टर्स, जयपुर. फोन : 0141-2606883, 2606591

प्रस्तुत पुस्तक में मुद्रित समस्त सामग्री, आवरण पृष्ठ, चित्रादि के सम्बन्ध में प्रकाशक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इसके किसी भी अंश को पूर्व में बिना लिखित अनुमति के मुद्रित करना या करवाना, कॉपीराइट नियमों का उल्लंघन होगा जिसका सम्पूर्ण दायित्व उन्हीं का होगा और हर्जे-खर्चे के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे।

Rs. 10/-

Scanned by CamScanner

क्रान्तिकारी राष्ट्रसंत
मुनिश्री तरुणसागरजी : एक परिचय

- 13 वर्ष की उम्र में जैन संन्यास।
- 20 वर्ष की उम्र में दिगम्बर मुनि दीक्षा।
- 25 वर्ष की उम्र में जीटी.वी. के माध्यम से महावीर वाणी के विश्वव्यापी प्रसारण की ऐतिहासिक शुरुआत।
- 33 वर्ष की उम्र में 'राष्ट्रसंत' की पदवी से नवाजे गये।
- 35 वर्ष की उम्र में गुरुमंत्र दीक्षा देने की नई परम्परा की शुरुआत।
- 38 वर्ष की उम्र में 'भारतीय सेना' को सम्बोधन व सेना द्वारा 'गॉर्ड ऑफ आनर' का सम्मान, इसी वर्ष श्रवणवेलगोला (कर्नाटक) स्थित भ. बाहुबली के अन्तर्राष्ट्रीय महामस्तकाभिषेक महोत्सव में प्रमुख वक्ता।
- 39 वर्ष की उम्र में आजादी के बाद प्रथम बार राजभवन (बैंगलोर) में अतिविशिष्ट लोगों को सम्बोधन व आहार चर्या।
- 40 वर्ष की उम्र में बेहद अस्वस्थ (18 सितम्बर, 07) होने पर भी मुनि पद पर बने रहने का ऐतिहासिक निर्णय।
- 42 वर्ष की उम्र में महाराष्ट्र पुलिस अधिकारियों को मार्गदर्शन।
- 43 वर्ष की उम्र में आरएसएस (नागपुर) द्वारा विजया-दशमी पर आयोजित मुख्य कार्यक्रम पथ-संचलन में स्वयंसेवकों को सम्बोधन।

Scanned by CamScanner

तरुणसागरजी ने रचा

एक और इतिहास

क्रान्तिकारी राष्ट्रसंत के नाम से विख्यात मुनिश्री तरुणसागरजी इतिहास पर इतिहास रचते जा रहे हैं और इतिहास भी ऐसे जिनके विषय में कोई मुनि-आचार्य सोच भी नहीं सकता। मुनिश्री तरुणसागरजी एकदम असंभव को संभव बनाते हैं और इतिहास की फेहरिस्त में एक और कार्य जुड़ जाता है।

चाहे वह लाल किले से राष्ट्र को सम्बोधन हो या भारतीय सेना से मुखातिब। विभिन्न टी.वी. चैनलों के माध्यम से महावीर वाणी के विश्वव्यापी प्रसारण की शुरुआत हो या फिर हर शहर/नगर में 40-50 हजार श्रोताओं का हुजूम। सब कुछ बेजोड़ और नायाब है। सच तो यह है कि मुनिश्री तरुणसागरजी का जन्म ही नये-नये इतिहास रचने को हुआ है। आज से 30 वर्ष पूर्व 13 वर्ष की उम्र में जैन दीक्षा लेकर इतिहास रचने की जो श्रृंखला शुरू की वह अब तक जारी है।

जैन मुनि की पहचान बन चुके मुनिश्री तरुणसागरजी ने दुनिया को बता दिया है कि दिगम्बर साधु क्या होता है ? यह सच है कि आज 40 प्रतिशत साधु-साध्वी आपके साहित्य को पढ़कर बोलते हैं और कुछ तो आप जैसे बोलने का प्रयास भी करते हैं। आपकी बहुचर्चित कृति 'कड़वे-प्रवचन' पुस्तक की 5,00,000 प्रतियां छपना और बिकना आपकी लोकप्रियता का जीता-जागता उदाहरण है।

अरे बाबा ! क्या-क्या लिखूं ? अगर सब कुछ लिखने लग जाऊं तो बस फिर तो इसी में सुबह से शाम हो जायेगी। इसलिए बाकी सब कुछ छोड़कर अपने मुद्दे पर आता हूँ और आपको बताता हूँ वह ऐतिहासिक घटना जो वाकई में कोई 'क्रान्तिकारी संत' ही कर सकता है।

विजयादशमी का दिन था और नागपुर शहर। वही नागपुर, जहां से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर.एस.एस.) का उद्गम हुआ और देश व दुनिया में छा गया। भारत के इतिहास में पहली मर्तबा आर.एस.एस. के सरसंघ चालक डॉ. मोहन भागवत के विशेष आमंत्रण पर मुनिश्री ने विजयादशमी के मुख्य समारोह संघ के पंथ संचलन में सम्मिलित हजारों स्वयंसेवकों को सम्बोधित किया। रेशमबाग मैदान पर आयोजित यह कार्यक्रम सुर्खियों में रहा। जहां दो राष्ट्रीय चैनल कार्यक्रम का सीधा प्रसारण कर रहे थे वहीं स्टार न्यूज, जी न्यूज, आईबीएन-7 आदि अन्य चैनल भी कार्यक्रम के कवरेज के लिए मौजूद थे। मुनिश्री के संघ को सम्बोधन कार्यक्रम में पधारने पर सरसंघ चालक प्रमुख डॉ. मोहन भागवत ने खुद अपने पदाधिकारियों के साथ मुनिश्री की अगवानी की। संघ के सदस्यों द्वारा अनुशासन, घोष, प्रत्याशिक, योग, सांगिक गीत की प्रस्तुति देखकर उपस्थित लोग आश्चर्य चकित रह गये।

इससे पूर्व एक मुलाकात में संघ मुख्यालय में भागवत से मुनिश्री ने स्पष्ट कहा कि मैं संघ के विचार और नीतियों से प्रभावित हूँ मगर एक बात है जिस पर मेरा विरोध है। वह बात है संघ के सदस्य की ड्रेस कोड में चमड़े के जूते और बेल्ट अनिवार्य होना। यह मुनिश्री तरुणसागरजी हैं, जो संघ-प्रमुख को ऐसी नेक और साहसी सलाह दे सकते हैं। जिस संघ के समक्ष बड़े-बड़े नेता मत्था टेकते हैं और जिसका लोहा दुनिया मानती है उस संघ को खरी-खरी सुनाना यह आसान नहीं है। चर्चा के दौरान संघ प्रमुख ने मुनिश्री को आश्वस्त किया कि संघ आपकी बात पर गंभीरता से विचार करेगा।

--●--

Scanned by CamScanner

संतवाणी ही संघवाणी

– डॉ. मोहन भागवत
सरसंघचालक

संत ही संघ है। भले ही संत और संघ में एक अक्षर का फर्क है, मगर उनके अर्थ में कोई भेद नहीं है। संत और संघ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

संतों की वाणी ही संघ की वाणी है। प्रत्येक स्वयं सेवक मुनिश्री और संतों की वाणी को गृहण कर जीवन में उतारें। डॉ. हेगडेवार जी के अनुसार केवल तत्वज्ञान से काम नहीं चलेगा, तत्वज्ञान को व्यवहार में लाना होगा।

आज विजयादशमी है। बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व है। अपने भीतर के रावण को समाप्त करने का संकल्प लें। संघ एक अनुशासित और देशभक्त संस्था है। समर्थ और सजग देश व समाज के निर्माण के लिए हमें मुनिश्री द्वारा कही गयी वाणी को जीवन में उतारना होगा।

हमारे निमंत्रण को मुनिश्री ने स्वीकारा और यहां पधारे तथा हमारे स्वयंसेवकों को मार्गदर्शन दिया। संघ पूज्यश्री का आभारी हूँ।

●●●

नोटः विजयादशमी के अवसर पर मुनिश्री के प्रति विनयांजलि भाषण का अंश

Scanned by CamScanner

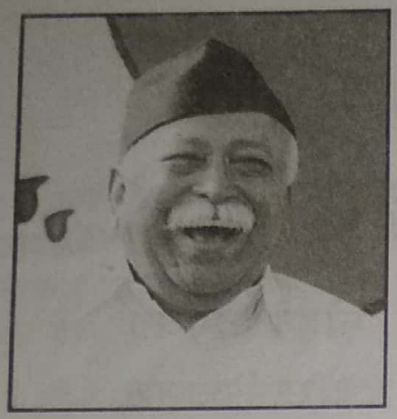

हास्य रस से सराबोर मुनि श्री के प्रवचनों में निमग्न संघ प्रमुख

हँसते-हँसाते कड़वी दवा पिलाते हैं मुनिश्री

क्रान्तिकारी संत मुनिश्री तरुणसागरजी के प्रवचन कितने सरस, मधुर और मनमोहक होते हैं - यह बताने की जरूरत नहीं है। विजयादशमी पर आरएसएस के पथ संचलन कार्यक्रम में मुनिश्री का सम्बोधन था। सम्बोधन में संघ के जहां हजारों स्वयंसेवक मौजूद थे, वहीं संघ प्रमुख डॉ. मोहन भागवत भी अपने पदाधिकारियों के साथ मौजूद थे।

मुनिश्री की आवाज की एक अलग पहचान है। उसमें तीखापन और मिठास के साथ एक भरपूर हास्य व उतार-चढ़ाव है। ऐसी आवाज के धनी मुनिश्री जब बोलते हैं तो श्रोताओं में गजब का हास्य भर देते हैं। संघ सम्बोधन कार्यक्रम में संघ प्रमुख भागवतजी भी इससे अछूते नहीं रहे। मुनिश्री बोल रहे थे और संघ प्रमुख ठहाके लगा रहे थे। लोगों का कहना था कि भगवतजी को इतना दिल खोलकर हँसते हुए पहले कभी नहीं देखा। मुनिश्री सच कहते हैं कि धर्म को सरस बनाओ, उसमें रस भर दो फिर देखना युवा पीढ़ी धर्म की तरफ कैसे खिंची चली आती है?

हँसते-हँसाते अपनी बात लोगों के जेहन में उतारने की कला में माहिर मुनिश्री रोंगटे खड़े कर देने वाली सच्चाई का बयान करते हैं। यही कारण है कि उनके प्रवचनों को 'कड़वे प्रवचन' कहा जाता है। संघ के मुख्य कार्यक्रम में मुनिश्री का सम्बोधन भारत के इतिहास में एक और इतिहास रच गया।

Scanned by CamScanner

यशस्वी अध्याय

क्षु.श्री प्रयत्नसागर

मुनिश्री के जीवन का एक और स्वर्णिम अध्याय नागपुर के इस यशस्वी चातुर्मास के दौरान जुड़ा। विजयादशमी का पावन पर्व जबकि सच्चाई का परचम लहराया था इस दिन नागपुर की हृदय स्थली पर हजारों स्वयंसेवकों को पूज्यश्री ने जब देश सेवा और राष्ट्रभक्ति की घुट्टी पिलाई तो वो दृश्य देखने जैसा था। भारत के इतिहास में कई सुनहरे पृष्ठों को जोड़ने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख्य कार्यालय नागपुर में वर्ष का सबसे बड़ा आयोजन दशहरे के दिन होता है। इस कार्यक्रम में जब मुनिश्री को आमंत्रित किया गया तो जैन मुनि को इतना बड़ा सम्मान मिलने पर जैन समाज तो गद्‌गद् था ही पर इससे भी ज्यादा खुशी संघ परिवार को हो रही थी।

चातुर्मास के दौरान संघ के राष्ट्रीय सरसंघ चालक डॉ. मोहन भागवत गुरुवर से इस कद्र जुड़ गये कि बिना किसी ना-नुनुच किये मुनिश्री को इस कार्यक्रम में आने की स्वीकृति देनी पड़ी। उल्लेखनीय है कि डॉ. भागवत देश-विदेश में फैले संघ के लाखों कार्यकर्ताओं के प्रमुख हैं, भारत की राजनीति की बड़ी-बड़ी हस्तियां डॉ. भागवत के दरबार में आये दिनों माथा टेकने को आती रहती हैं। प्रसिद्धि की इन बुलंदियों को छूने के बावजूद भी डॉ. साहब की गुरुवर के प्रति कमाल की विनम्रता है।

चूंकि संघ तो संस्कृति और संतों का दीवाना है लिहाजा वक्त-2 पर छोटे-बड़े आयोजनों में संतों का आशीर्वाद स्वयंसेवकों को मिलता रहता है पर इतने बड़े आयोजन में राष्ट्रसंत का पधारकर हजारों कार्यकर्ताओं के मनों में जिससे फौलाद भरने का महान् कार्य हुआ। यह संघ के इतिहास का भी महत्वपूर्ण क्षण था। एक जैसी वेशभूषा में सजे-धजे स्वयंसेवकों के विशाल जुलूस को देखकर खुद भारत माता का सिर बड़े गर्व के साथ ऊँचा हो जाता है। हजारों स्वयंसेवक और इतना अधिक अनुशासन अगर पूरे विश्व में कहीं सम्भव है तो मात्र संघ में। निस्वार्थ सेवा की मशाल थामे हर एक कार्यकर्ता किसी देवदूत से कम नहीं है।

विशेष तरह के वाद्ययंत्रों और संगीत के साथ में जब मुनिश्री का सभा स्थल में प्रवेश हुआ तो प्रवेश द्वार से भी पहले डॉ. भागवत अपने प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ में अगवानी के लिए उतावले होकर मुनिश्री की राह देख रहे थे। संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार की प्रतिमा पर नागपुर चातुर्मास के कार्याध्यक्ष संतोष पेंढारी और महामंत्री नरेश पाटनी ने माल्यार्पण करके स्वागत किया। देश और दुनिया के कोने-कोने से पधारने वाले कार्यकर्ताओं के लिए बनाये गये विशाल परन्तु बहुत सादगीपूर्ण भवन का दूर से निरीक्षण कर जब बहुत सुन्दर से बगीचे से गुजरकर सभा स्थल में प्रवेश हुआ तो ढेर सारे टी.वी. चैनलों से कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखकर संघ के और मुनिश्री के लिए समर्पित करोड़ों लोगों का दिल बाग-बाग हो उठा। कार्यकर्ताओं को लाखों की संख्या में इकट्ठा करके इतना अधिक प्रशिक्षित करना

Scanned by CamScanner

सिर्फ संघ के बस की ही बात है।

कार्यकर्ताओं ने जब विशेष संगीत के साथ कसरत, योगाभ्यास और लाठी-संचालन की प्रस्तुति की तो इस अवसर पर उपस्थित हजारों दर्शक दांतों तले अंगुली दबा बैठे। कार्यक्रम जब शिखर पर पहुंचा याने कि जब इस शिखर-पुरुष ने बरसने की शुरुआत की तो प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से सुनने वाले सभी लोग मानो झूम उठे। मन-मयूर को झूमता देखकर लोग समझ नहीं पा रहे थे कि ये प्रवचन का कार्यक्रम चल रहा है या संगीत का। मुनिश्री प्रवचन नहीं दे रहे थे बल्कि संघ के कार्यकर्ताओं को जीवन को संगीत बनाने की कला के गुर सिखा रहे थे। हालांकि मुनिश्री बहुत कड़वा बोलते हैं इसलिए मुनिश्री के प्रवचनों को 'कड़वे प्रवचन' कहा जाता है। गांव के कुछ देहाती लोग तो मुनिश्री को 'कड़वे प्रवचन देने वाले महाराज' की बजाय 'कड़वा महाराज' ही बोल देते हैं। पर आज इस कड़वे महाराज की वाणी में कुछ अलग ही तरह की मिठास नजर आ रही थी।

देश की तरक्की राह पर अवरोध बनकर आने वाले देश द्रोहियों पर जब शब्दों के शोले बरसे तो देश भक्तों की तालियां थमाये नहीं थम रही थी। प्रवचन का हीरो मुल्ला नसरुद्दीन जब प्रवचन में घूमते-घामते आ पहुँचा तो देश-भक्ति और वीर रस से भरा माहौल एकदम से हँसी के ठहाकों से गूंज उठा। आजकल तरह-तरह के टी.वी. चैनलों से पब्लिक को हँसाने के लिए 'लाफ्टर चैनलों' जैसे कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है। ऐसे ही एक लाफ्टर शो के राष्ट्रीय स्तर के कलाकार श्री जय झंकारिया जब मुनिश्री की प्रवचन सभा में आये तो उनके मुख से बरबस ही निकल पड़ा कि यदि सारे लाफ्टर प्रोग्रामों के सारे कलाकार भी इकट्ठे हो जाये तो हँसाने के मामले में मुनिश्री की 1% भी बराबरी नहीं कर सकते। संघ के तमाम कार्यकर्ता जीवन में पहली बार देशप्रेम, प्रभु-भक्ति, विपन्न सेवा का पाठ ठहाकों के साथ पढ़ रहे थे। इन विषयों के ढेर सारे सिद्धहस्त वक्ताओं की खान है संघ कार्यालय। पर इतने आनंददायी तरीके से विषय की गहराई को पहली बार ही छुआ जा रहा था। चोट पर चोट, घाव पर घाव, दर्द पर दर्द सहनकर भी माँ भारती की सेवा करने वाला ये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मुनिश्री को पाकर फूला नहीं समा रहा था।

प्रवचन के बाद में सरसंघ चालक डॉ. मोहन भागवत की विनयांजलि को सुनकर ऐसा लग रहा था कि खुद माँ सरस्वती ही भागवत जी की जिह्वा पर विराजमान होकर बोल रही है। देश सेवा और निष्ठा का पाठ पढ़ाने वाले तो बहुत हैं पर इस तरह से अपना खून जलाकर हजारों के दिल में देश को ऊंचा उठाने का जज्बा पैदा करने वाले मुनिश्री जैसे संत विरले ही हुआ करते हैं। आने वाले कई-कई दिनों तक बच्चे-बच्चे के मुख पर संतश्री का नाम ही गूंजता रहा। हो भी क्यों न ! मुनिश्री तो हिन्दुस्तान की सभ्यता और संस्कृति के शिखर-पुरुष जो हैं। हजारों-हजारों साल पुरानी ढेर सारी संस्कृतियां तो काल के गाल में समा गई पर भारतीय संस्कृति आज भी अपने पूरे गौरव के साथ जीवित है तो इसकी वजह है मुनिश्री जैसे कालजयी संत और इन संतों के एक इशारे पर अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी भारत के सम्मान को ऊंचा उठाने वाला राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ।

Scanned by CamScanner

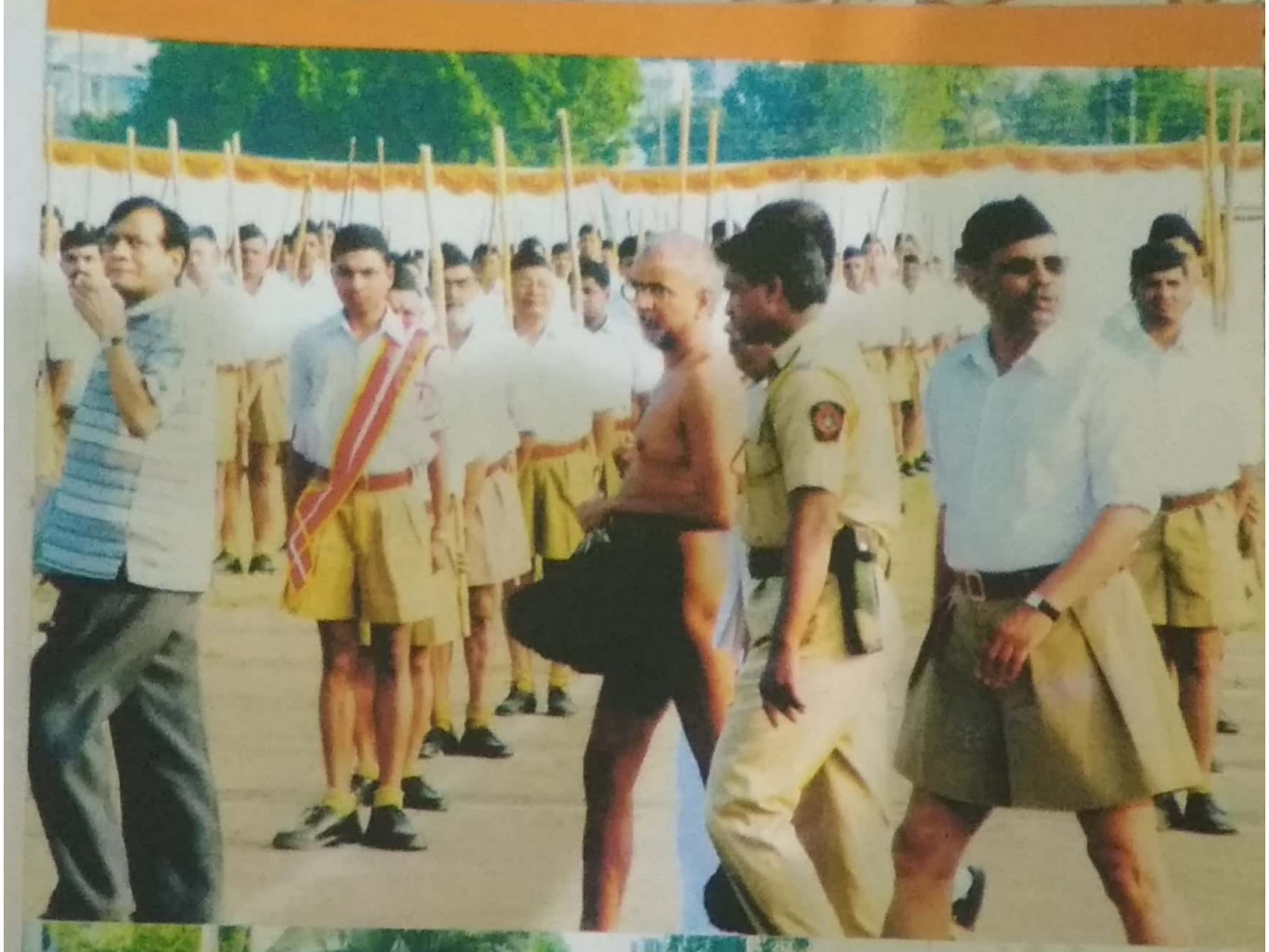

Scanned by CamScanner

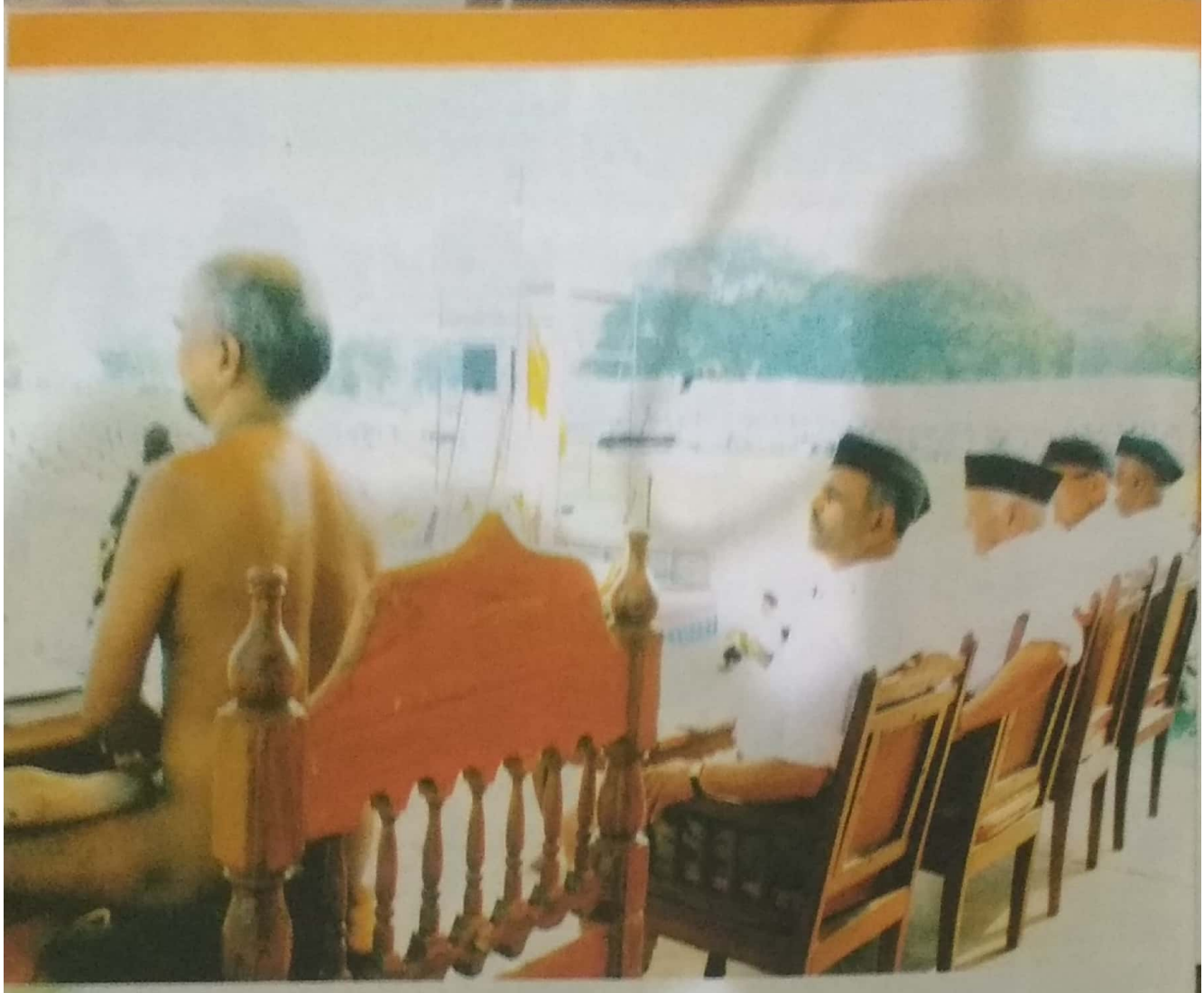

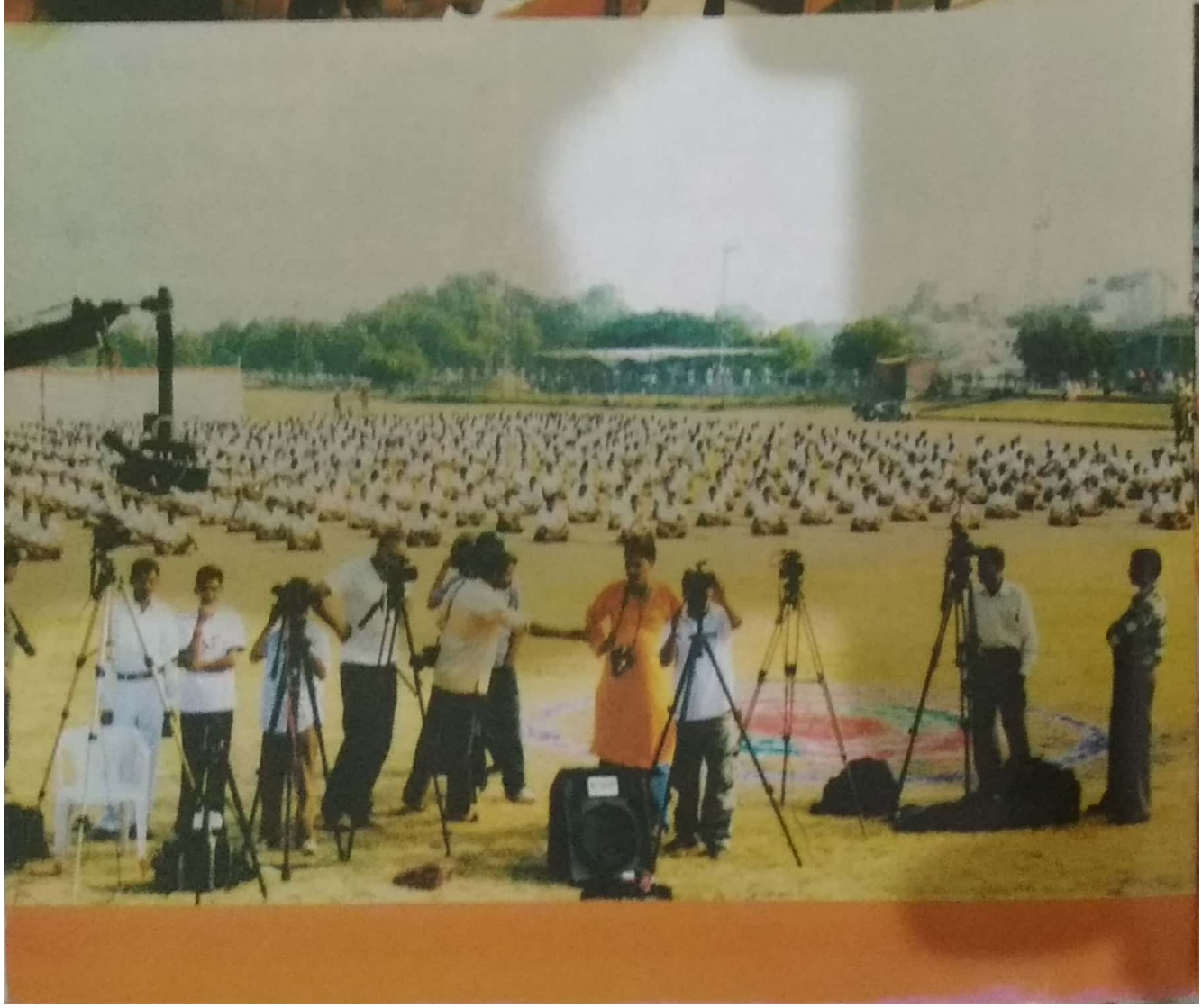

Scanned by CamScanner

सरसंघ चालक डॉ. मोहन भागवत (ऊपर) व पूर्व सरसंघ चालक के. सी. सुदर्शन (नीचे)।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

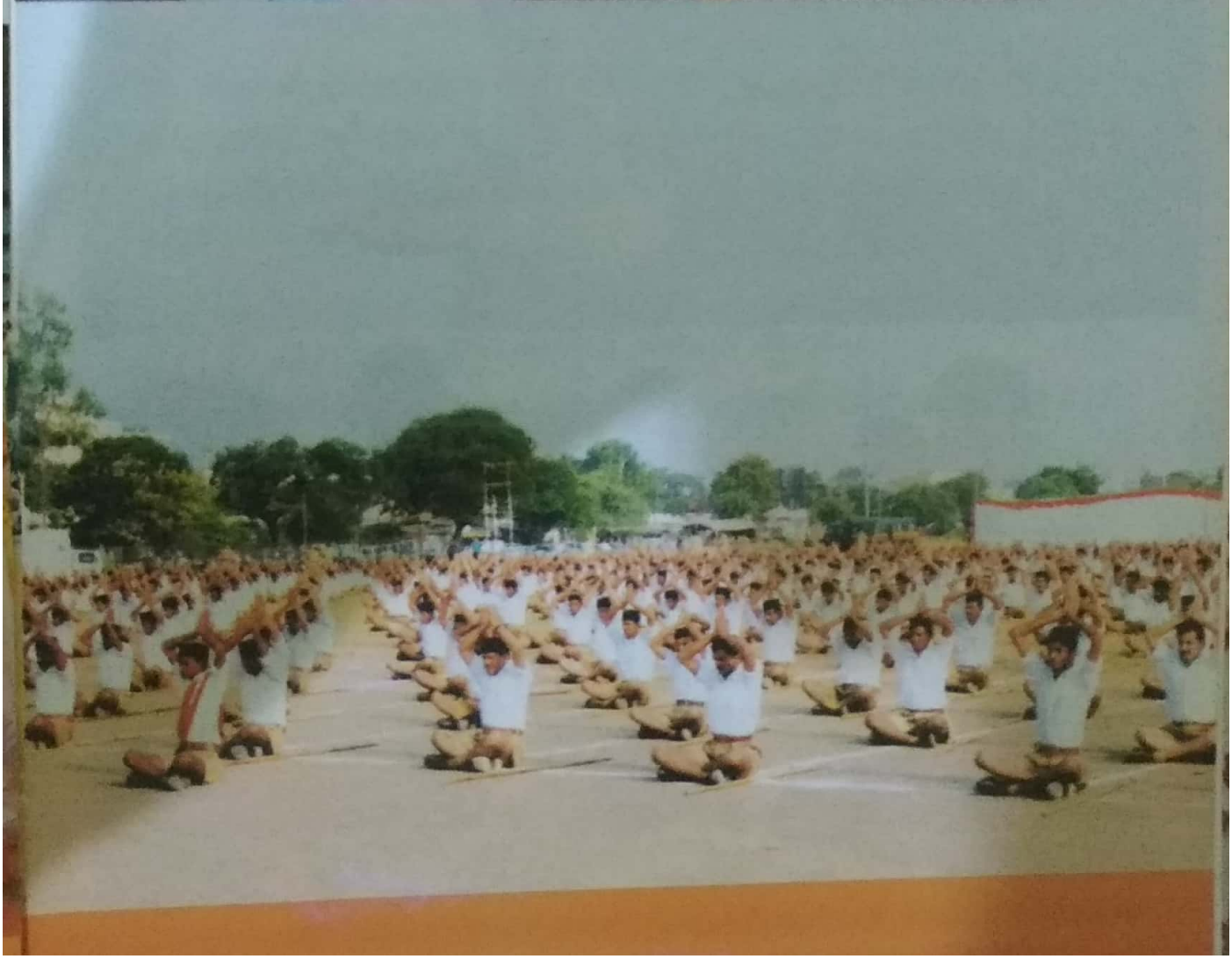

Scanned by CamScanner

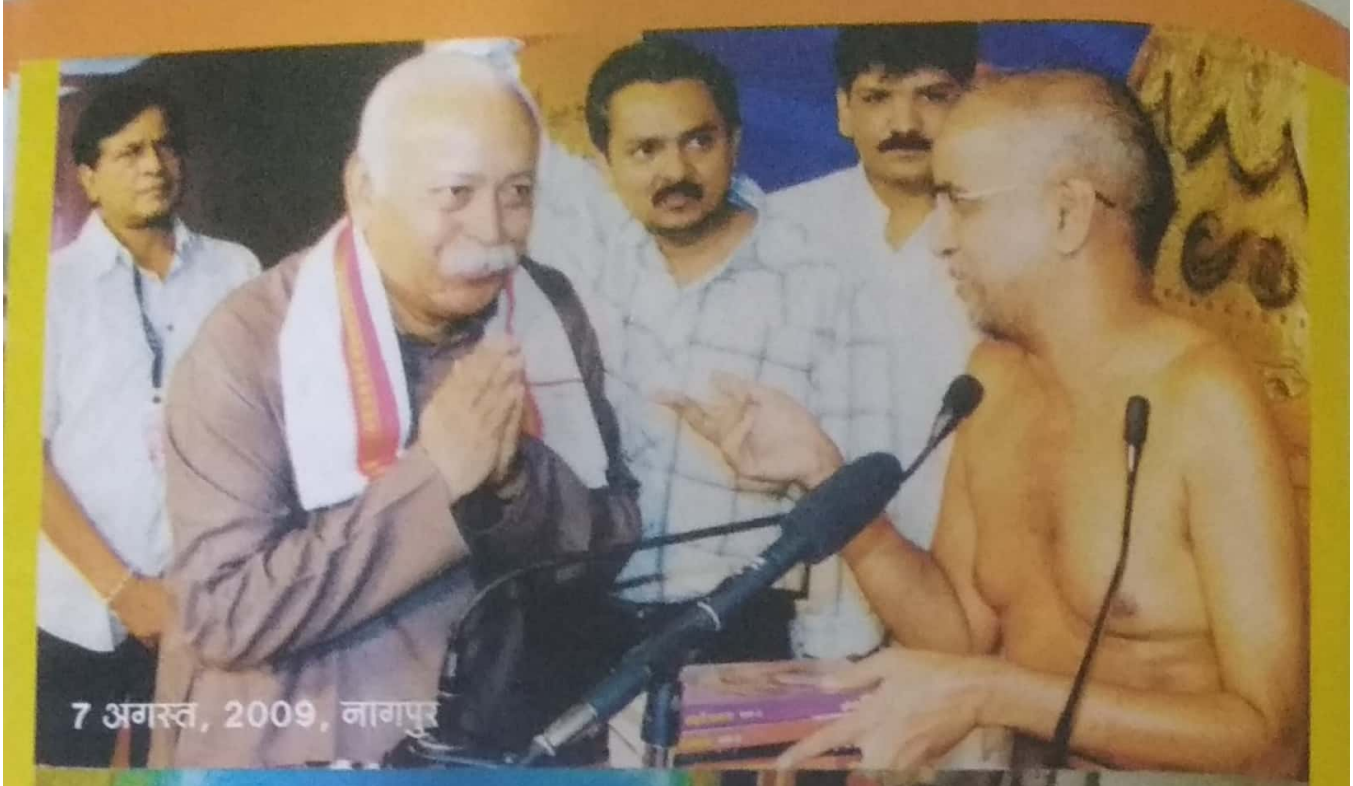

7 अगस्त, 2009, नागपुर

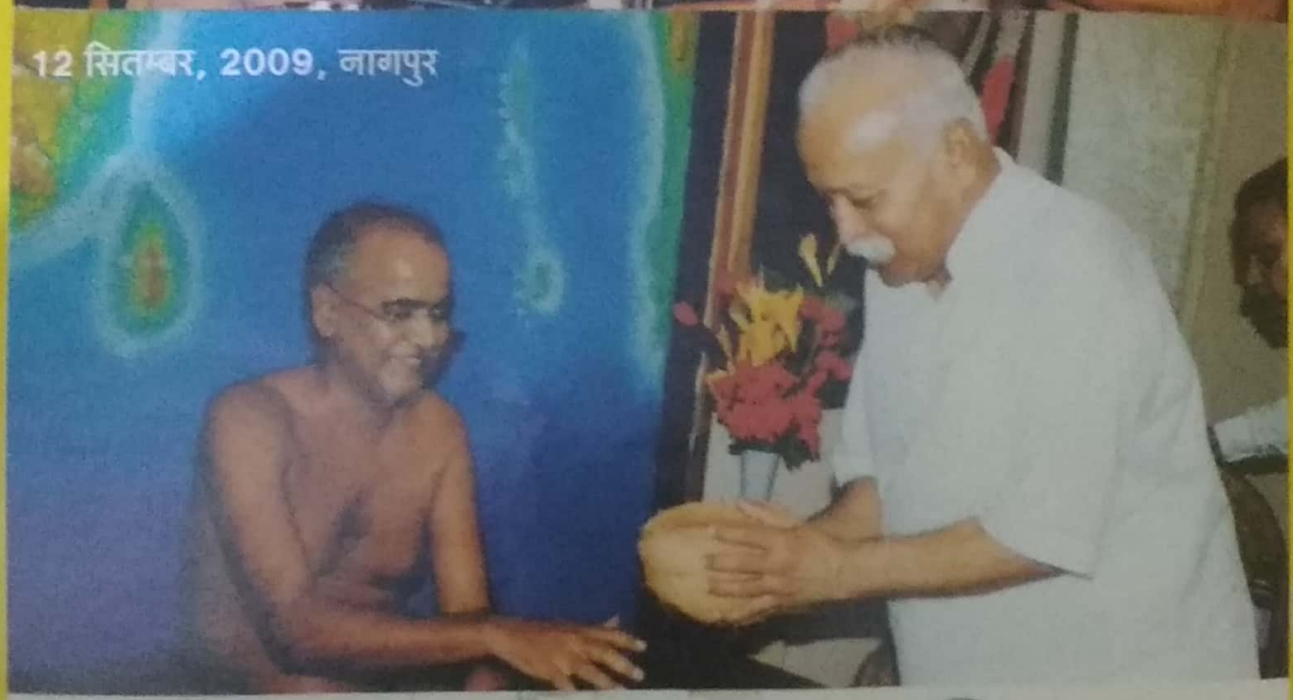

12 सितम्बर, 2009, नागपुर

28 सितम्बर, 2009, नागपुर

Scanned by CamScanner

संत और संघ

आदमी बिन खाए 40 दिन जिन्दा रह सकता है, बिन पिए 20 दिन जिन्दा रह सकता है, 8 मिनिट बिन श्वास लिए जिन्दा रह सकता है मगर बिन विश्वास और उम्मीद के एक मिनिट भी जिन्दा नहीं रह सकता है।

अपने में विश्वास जगाओ। जिन्दगी में जो महत्व श्वास का है, वही महत्व विश्वास का है। श्वास जिन्दगी है और विश्वास बंदगी है। लोग कहते हैं कि दुनिया शेषनाग के सिर पर टिकी है। पर मेरा विश्वास है कि दुनिया शेषनाग के सिरपर नहीं बल्कि आपसी विश्वास पर टिकी है। जिस दिन आपसी विश्वास खत्म हो जाएगा, समझना उस दिन सब कुछ खत्म हो जाएगा।

रामभरोसे मत बैठिए। खुद पर भरोसा रखिए। इस मुल्क के धार्मिक आदमी, हिन्दू परम्परा में जीने वाला आदमी 33 करोड़ देवी-देवताओं के अस्तित्व पर विश्वास कर लेता है। जैन परम्परा में जीने वाला आदमी 24 तीर्थंकरों के अस्तित्व पर विश्वास कर लेता है लेकिन मेरे भीतर भी एक परमात्मा है, मुझमें भी राम-कृष्ण, बुद्ध, महावीर जैसी शक्ति है - इस बात पर विश्वास नहीं कर पाता।

निवेदन है कि भीतर के देवता को जगाओ। मंदिर जाने के साथ-साथ कभी अपने घर भी आओ। अपना घर अपना होता है। संसार का क्या ? संसार तो महत एक सपना होता है।

संसार भी तो एक सपना है, स्वप्न की भांति है। जिस प्रकार जागने पर स्वप्न झूठा प्रतीत होता है, उसी प्रकार आत्मा का ज्ञान होने पर संसार मिथ्या मालूम पड़ता है। खुद पर विश्वास रखो और खुदा के रास्ते पर बढ़ चलो, फिर कोई तुम्हें अपने रास्ते से नहीं रोक सकता।

हमें रोक सके ये, जमाने में दम नहीं।
हमसे जमाना है, जमाने से हम नहीं।।

एक आदमी ने ईश्वर से पूछा : आपके प्रेम और मानवीय प्रेम में क्या अन्तर है ?

ईश्वर ने कहा : आसमान में उड़ता हुआ पंछी मेरा प्रेम है और पिंजरे में कैद पंछी मानवीय प्रेम है। प्रकृति ने दुनिया की खूबसूरती के लिए सब कुछ दिया है लेकिन मनुष्य ने उसके साथ छेड़छाड़ करके उसे बद-सूरत बना दिया है। पर्यावरण को लेकर पूरी दुनिया चिन्तित है। पर्यावरणवादी वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण को लेकर चिन्तित हैं। वायु, ध्वनि और जल प्रदूषण से भी ज्यादा खतरनाक है - विचार-प्रदूषण।

देश और दुनिया का हर आदमी अपने विचार शुद्ध कर ले तो उसका आचार आपोआप शुद्ध हो जाएगा और फिर दुनिया को स्वर्ग बनने में देर नहीं लगेगी। आपको पता होना

Scanned by CamScanner

चाहिए कि सिकन्दर का वैभव तभी तक पूजा गया, जब तक वो जिन्दा रहा। पर महावीर बुद्ध का त्याग आज भी पूजा जा रहा है। महाविनाश को बढ़ते देख समाधान में सिर्फ बुद्ध-महावीर नजर आ रहा है।

इंसान कद से नहीं, विचारों से ऊँचा उठता है। शासन से नहीं, अनुशासन से महान् बनता है। किसी भी देश और समाज को ऊँचा उठाने में अनुशासन का बड़ा रोल होता है। आज मैं संघ के स्वयंसेवकों के बीच हूँ। मैं बहुत ही स्पष्टता से कह सकता हूँ कि भक्ति व वैराग्य सीखना हो तो सत्संग में जाइए और अनुशासन व राष्ट्रप्रेम सीखना है तो संघ में आइये। संघ की इन दो खूबियों ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया। दुनिया मुझसे प्रभावित होती है मगर मैं संघ की इन दो खूबियों से प्रभावित हुआ हूँ।

मेरा मानना है कि संघ महज एक विचार नहीं, बल्कि एक जीवन शैली हैं। अंधों की यात्रा नहीं बल्कि आँख वालों की रैली है। अंधे के समक्ष सूरज की महिमा गाने, गुणगान करने की जरूरत नहीं है। उसे आँखें दे दो बस वह उसका महत्व खुद-ब-खुद समझ जाएगा। अंधों को दृष्टि दो और खुद को सम्यग्दृष्टि बनाओ - बस यही आज की दो जरूरत हैं।

नागपुर की सरजमीं पर पैदा हुआ संघ (आर.एस.एस.) देश और दुनिया में छा गया। डॉ. हेडगेवार जी का आह्वान: सोने वालो जागो, अब जागने का समय आ गया। जागरण जरूरी है क्योंकि जागा हुआ हर आदमी राम, कृष्ण और महावीर है और सोया हुआ आदमी कंस है, रावण है, भस्मासुर है, कुंभकरण है।

दुनिया में इतने पाप और अपराध हो रहे हैं - यह किसके कारण हो रहे हैं ? सब सोये हुए लोगों के कारनामे हैं। जागा हुआ आदमी किसी की हत्या, कोई बलात्कार, खून-खराबा कर ही नहीं सकता। दुनिया कहती है कि शराब पीने के बाद आदमी बेहोश हो जाता है। भगवान महावीर एक नई बात कहते हैं। वे कहते हैं कि शराब पीने के बाद आदमी बेहोश नहीं होता बल्कि बेहोश आदमी ही शराब पीता है। होश में आदमी शराब पी ही नहीं सकता।

याद रखना : मूर्छा ही मृत्यु है और होश ही जीवन है। आपसे निवेदन होगा कि बाहर की आँखें बंद होने से पहले भीतर की आँखें खुल जानी चाहिए। वरना तरुणसागर की नजर में तुम्हारी गिनती अंधों में होगी।

संघ के सदस्यों ने संघ से सम्बन्धित कुछ साहित्य मुझे दिया। उसे मैं पढ़ रहा था। संघ का एक विचार मुझे अच्छा लगा। मुझे लगा कि मैं वर्षों से यही काम कर रहा हूँ जो संघ अपने स्वयंसेवकों से कहता है। संघ कहता है कि आदमी को व्यक्तिनिष्ट और परिवार निष्ट ही नहीं होना चाहिए बल्कि उसे समाज निष्ठा और देश प्रतिष्ठा का व्रत भी लेना चाहिए।

देश को सिर्फ कुछ नेता नहीं चलाते बल्कि प्रत्येक नागरिक उसकी ताकत होता है। आत्मानुशासन ही देश-अनुशासन बनता है। 24 घंटे में से कम से कम एक घंटा अपने समाज के लिए, अपने धर्म के लिए, अपने देश के लिए देना ही चाहिए। सुधार की प्रक्रिया

Scanned by CamScanner

स्वयं से, खुद से, अपने आपसे शुरू होनी चाहिए। कहते हैं कि हम बदलेंगे – युग बदलेगा। हम सुधरेंगे – जग सुधरेगा।

मुल्ला नसरुद्दीन ने अपनी बीवी से कहा : अगर मेरे हाथ में सरकार हो तो मैं इस देश की तकदीर बदल दूँगा। उसकी बीवी ने कहा – ठीक है, ठीक है। पहले तुम अपना पायजामा तो बदल लो, सुबह से उल्टा पहन रखा है। खुद बिगडे हुए लोग दुनिया को सुधारने चले हैं। अब क्या होगा। भगवान ही जाने।

दुनिया से मैं कहना चाहता हूँ कि मेरा कोई नुकसान न करे – यह अपने वश की बात नहीं है परन्तु मैं किसी का नुकसान न करूं – यह अपने हाथ की बात है। मेरी दृष्टि में जो ऐसा सोचता है – वही सच्चा धर्मात्मा हैं, फिर भले ही वह मंदिर–मस्जिद जाता हो या न जाता हो, साधु–संतों को सुनता हो या न सुनता हो। सुनना महत्वपूर्ण नहीं है, जीवन में उतारना महत्वपूर्ण है। कितना खाया यह महत्वपूर्ण नहीं है। कितना पचाया यह महत्वपूर्ण है।

आज विजयादशमी है। एक पौराणिक कथा के अनुसार आज के दिन राम ने रावण पर विजयी पाई थी और इसी दिन से यह बुराई पर अच्छाई की विजयी का पर्व बन गया। रावण को मरे सदियां गुजर गईं। इसके बावजूद मुझे लगता है – रावण आज भी जिन्दा है।

21वीं सदी का सबसे भीषण रावण आतंकवाद ही है। इतिहास साक्षी रहा है कि दुनिया में जब–जब आसुरी वृत्ति के रावण ने निर्दोष लोगों की हत्या कर आतंक फैलाया है, उसका देर–सबेर सर्वनाश ही हुआ है। आतंकवादी रावण के कई सिर हैं। आतंकवाद की भावना एक आसुरी भावना है। हमें इससे लड़ना है।–देश और दुनिया में अमन–चैन के लिए इसका अंतिम संस्कार करना है।

हमारा गौरवशाली अतीत इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आतंकवाद ने चाहे जिस भी रूप में सिर उठाया हो, उसे कुचलने के लिए सारी प्रजा एक होकर लड़ी है क्योंकि आतंकवाद हो या रावण – इनका अपना कोई धर्म और मजहब नहीं होता है। जो निर्दोषों की हिंसा, हत्या और अत्याचार करता है, वह धार्मिक नहीं हो सकता। यह समय दुनिया को आतंकवाद के रावण से मुक्ति दिलाने का समय है।

भारत शुरू से ही अहिंसा और सत्य का पुजारी रहा है। भगवान महावीर ने ''अहिंसा परमो धर्म:'' कहा। पर इसका मतलब यह कतई नहीं कि दुश्मन आपकी हत्या करने आ रहा हो और आप चुपचाप अहिंसा परमो धर्म: का जाप देने बैठ जाओ। अहिंसक से अहिंसक व्यक्ति को भी अपनी, अपने परिजनों की, धर्मायतनों की रक्षा–सुरक्षा के लिए वह सब करने का निर्देश है जो आवश्यक हो।

महावीर की हिंसा कायरता नहीं बल्कि एक अवधारणा है, एक साधना है। उसमें सिर्फ संकल्पी, हिंसा का गृहस्थ जीवन में त्याग बताया है बाकी तीन हिंसा (आरंभी हिंसा, उद्योगी हिंसा, विरोधी हिंसा) स्वीकृत हैं। दीवार पर कुछ ना लिखे – यह बताने के लिए 'कुछ न

Scanned by CamScanner

लिखे' तो लिखना ही पड़ेगा। समर्थ बनें, सजग बनें, सावचेत रहें - यही देश की जनता को महापुरुषों का संदेश है। भारत इसलिए महान् है कि वह दुनिया को स्वर्ग जैसा सुखद बनाने के गुर सिखाता है। महावीर का "जियो और जीने दो" का यह सूत्र क्या स्वर्ग-निर्माण का सूत्र नहीं है ?

मैं मुनि तरुणसागर तो देश की माताओं-बहनों का आह्वान करूंगा कि वे अपनी कोख से दो बच्चों को जन्म देने की बनिस्वत तीन बच्चों को जन्म दें। दो बच्चे अपने लिए रखें और तीसरा बच्चा भारत माता की आन-बान-शान के लिए समर्पित कर दें। दुनिया में अकेला भारत ऐसा मुल्क है, जिसको माता कहा- 'भारत माता'। क्या आपने कभी सुना - अमेरिका माता, लन्दन माता, पाकिस्तान - माता, जापान माता लेकिन हम कहते हैं - भारत माता की...। वाकई में भारत माता है, क्योंकि वह सबको ही निभाता है। इसलिए भारत माता है।

आप सरल बनें, नम्र बनें। नम्रता बड़प्पन है। दूसरों के साथ सदा नम्र रहें। मगर दूसरों को यह अहसास भी कराते रहिए कि यह नम्रता तुम्हारा बड़प्पन है, न कि तुम्हारी कमजोरी। जिस दिन लगे कि तुम्हारा हाथ जोड़ना दूसरों को तुम्हारी कमजोरी लग रहा है तो उसे अहसास करा दीजिए कि तुम्हें हाथ उठाना भी आता है। जैसे पड़ोसी देश भारत के संयम को उसकी कमजोरी समझ रहा है। अब जरूरत है, उसे यह अहसास कराने की कि भारत को हाथ उठाना भी आता है।

दुनिया को मालूम होना चाहिए कि भारत क्षमाशील ही नहीं क्षमताशील भी है। क्षमाशीलता भारत का बड़प्पन है लेकिन कहते हैं ना कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते।

एक बार भूल करे, वह नादान।
दो बार भूल करे, वह अज्ञान।
तीन बार भूल करे, वह शैतान।
बार-बार भूल करे, वह पाकिस्तान।
हर बार क्षमा कर दे, वह 'हिन्दुस्तान'॥

हिन्दू कौन ? जो इस देश को अपनी मातृभूमि मानता है और यहाँ की संस्कृति को अपनी संस्कृति मानता है, वह हिन्दू है। फिर चाहे वह जैन हो, बौद्ध हो, आर्य समाजी हो, सिक्ख हो, लिंगायत हो कोई फर्क नहीं पड़ता। हिन्दू कोई पंथ नहीं, आदमी का आत्मविश्वास है, त्याग और बलिदान की संज्ञा है। हिन्दू अपने आप में एक राष्ट्रीयता है, मान्यता है।

मैंने गीता को आद्योपांत पढ़ा। गीता में एक बार भी हिन्दू शब्द नहीं आया। मतलब साफ है गीता केवल हिन्दुओं के लिए नहीं अपितु पूरे हिन्दुस्तान के लिए है, दुनिया के लिए है। कृष्ण ने जो गाया वह गीता और जो कहा वह भागवत बन गया। जैसे गंगा सबकी प्यास बुझाती है, वैसे ही गीता सबमें प्यास जगाती है।

आपने पढ़ा होगा कि आततायी रावण के अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए राम आ

Scanned by CamScanner

गए। कंस के अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए श्रीकृष्ण आ गए। अर्जुनमाली और अंगुलीमाल को समझाने के लिए महावीर-बुद्ध आ गए। पर आज जो समाज में बुराइयाँ और समस्याएं हैं, उनसे मुक्ति दिलाने के लिए अब कोई आकाश से अवतारी पुरुष नहीं आने वाला। श्रीकृष्ण ने कहा : अब बचाने के लिए कोई नहीं आयेगा। तुम्हें ही राम-कृष्ण, बुद्ध-महावीर बनकर आना होगा और बुराइयों से दो-दो हाथ करने होंगे। बड़ा आदमी वह नहीं जिसके घर चार-चार नौकर काम करते हैं बल्कि बड़ा आदमी वह है जो चार नौकर का काम अकेला कर लेता है। श्रम को पूजने वाला बड़ा होता है। आज समाज और देश में कई समस्याएं हैं - भुखमरी, गरीबी, बेरोजगारी, बीमारी, अशिक्षा जैसी कई समस्याएं अपना सिर उठाए खड़ी हैं। हमें इनसे सामना करना है। खुद आगे आकर इनसे मुकाबला करना है।

अभी सांगिक गीत पढ़ा गया। उसमें कहा गया - 'नहीं रुकना, नहीं थमना'। चरेवैति, चरेवैति। चलते रहो। चलना ही जीवन है। मगर हम इतने आलसी और प्रमादी हैं कि हाथ-पांव हिलाना भी नहीं चाहते। आपको पता होना चाहिए कि तेज दौड़ने की बनिस्वत धीरे चलने में ज्यादा सुख है। चलने की बनिस्पत खड़े हो जाने में ज्यादा सुख है, खड़े हो जाने की बनिस्वत बैठ जाने में ज्यादा सुख है, बैठ जाने की बनिस्वत लेट जाने में ज्यादा सुख है, लेट जाने की बनिस्वत सो जाने में ज्यादा सुख है, और सो जाने की बनिस्वत मर जाने में ज्यादा सुख है। पर ऐसा सुख हमें नहीं चाहिए जो हमसे हमारा जीवन ही छीन ले। डॉ. केशव बलिराव हेडगेवार जी ने भी अपने संदेश में कहा - जागो, उठो, अपने पौरुष को जगाओ।

आदि शंकराचार्य ने एक बात कही - जगन्मिथ्या ब्रह्म सत्यं। संसार मिथ्या है, झूठा है, स्वार्थी है। जीवन का अंतिम सत्य परमात्मा है। 'दुनिया के हर प्रेम में स्वार्थ है।' भले ही वह समझ में ना आए पर दुनिया के हर प्रेम के पीछे एक स्वार्थ होता है।

पत्नी ने अपने पति से पूछा : अगर मैं मर गई तो ? पति ने पत्नी के मुख पर हाथ रख दिया और कहा : ऐसा अशुभ-अशुभ नहीं बोलते। पत्नी को लगा देखो! ये मुझसे कितना प्यार करते हैं। पत्नी ने आगे फिर पूछा : सपोज करो, मैं मर गई तो ? पति बोला - बकवास करना बन्द करो। पत्नी को लगा देखो ! ये मेरे से कितना प्यार करते हैं। पत्नी ने आगे फिर पूछा : कल्पना करो, मैं मर गई तो ? पति ने कहा : मैं तुझे मरने ही नहीं दूंगा। पत्नी ने कहा - देखो ! ये मुझे कितना प्यार करते हैं। पत्नी ने फिर कहा - मान लो मैं मर गई तो ? पति बोला : फिर तो मैं पागल ही हो जाऊंगा। पत्नी को फिर लगा देखो ! ये मुझसे कितना प्यार करते हैं। पत्नी ने पूछा : इसका मतलब तुम दूसरी शादी नहीं करोगे? पति बोला : अब पागल का क्या भरोसा। वह तो कुछ भी कर सकता है। जगन्मिथ्या-ब्रह्म सत्यं।

संसार धोखा है। इस धोखा में से मौका तलाशना है। जीवन एक अवसर है, मौका है प्रभु को पाने का। याद रखो महान् लोग वे सामान्य व्यक्ति होते हैं जिनमें असामान्य संकल्प होता है। सीधे-सरल रास्ते पर तो कोई भी चल लेता है। टेढ़े-कठिन रास्ते पर चलने वालों का ही इतिहास बनता है। किसी ने कहा : जो लोग जोखिम नहीं उठाते वे कभी आगे नहीं बढ़ पाते। आपको पता है कि किसान की सफलता बरसात में है और जीवन की सफलता पुरुषार्थ में है।

Scanned by CamScanner

''मुश्किलें हमेशा हारती हैं, संघर्ष करने वाले हमेशा जीतते हैं।''

मेरा मानना है कि जब तक धर्म और संस्कार इस देश के खेत-खलिहानों, न्याय-पालिकाओं और संसार में नहीं पहुंचता तब तक देश और दुनिया में कल्याण का मार्ग प्रशस्त नहीं होगा। आज धर्म सिर्फ मंदिर और मस्जिद तक सीमित है और अधूरा है। यह अधूरापन जीवन के लिए खतरनाक है।

आज सीमेंट की सड़कें तो बन रही हैं लेकिन मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाली सड़कों का निर्माण कैसे होगा ? यह हमें सोचना है। धर्म, जाति, सम्प्रदायों के छोटे-छोटे टुकड़ों से इस देश को नुकसान हुआ है। हमें इन सबसे ऊपर उठकर सिर्फ इस सोच को बदलना होगा कि धर्म और कर्म भिन्न है। कर्तव्य मेव धर्म: - कर्तव्य ही धर्म है।

अफसोस है कि आदमी अपने अधिकारों के लिए तो लड़ता है मगर अपने कर्तव्यों को भूल जाता है। कर्तव्य ही भवितव्य है। कर्म करिए। फल की चिन्ता मत करिए। पर आदमी है कि निठल्ला, निकम्मा बना घूम रहा है। करना कुछ है नहीं, पर सब कुछ पाने की आस लिए घूम रहा है।

एक नौजवान खेत में आराम फरमा रहा था। किसी शुभचिन्तक ने कहा : भाई ! खेती क्यों नहीं करते ? नौजवान ने पूछा : खेती करने से क्या होगा ? शुभचिन्तक ने कहा : अरे भाई ! खेती करोगे तो फसल उगेगी। नौजवान ने फिर पूछा : फसल उगेगी तो क्या होगा ? शुभचिन्तक बोला : फसल आएगी तो रुपया पैसा मिलेगा। नौजवान ने फिर पूछा : रुपया पैसा आयेगा तो क्या होगा ? शुभचिन्तक ने कहा : ओ हो ! रुपया-पैसा होगा तो तुम्हारे घर नौकर-चाकर होंगे। नौजवान ने आगे फिर पूछा : नौकर-चाकर होंगे तो क्या होगा ? शुभचिन्तक ने कहा - कमाल के आदमी हो । अरे ! नौकर-चाकर होंगे तो फिर आराम से रहना। आलसी नौजवान ने कहा : तो अभी मैं क्या कर रहा हूँ ? अब भला आप ही बताइये। ऐसे आदमी को समझाना कितना कठिन है।

याद रखो : मुर्दों और मूर्खों को समझाना सम्भव नहीं है। आप न तो मुर्दा हैं, न ही मूर्ख हैं। आप तो स्वयंसेवक हैं और संघ का स्वयंसेवक कार्यशील होता है, गतिशील होता है और प्रगतिशील होता है।

मैं आनंद का अनुभव कर रहा हूँ कि संघ ने विजयादशमी के अपने मुख्य पथ संचलन समारोह में सम्मिलित स्वयंसेवकों से मुलाकात का अवसर दिया। संघ के सरसंघ चालक डॉ. मोहन भागवत जी यहाँ मौजूद हैं। जब उन्होंने इस सम्बन्ध में महीना भर पहले आग्रह किया तो मैंने कहा - मैं जरूर आऊँगा और आज लोगों के विरोध के बावजूद भी मैं आया। संघ का अनुशासन और राष्ट्र प्रेम देखकर मैं ही नहीं - यहाँ मौजूद सैकड़ों लोग भी अत्यन्त गद्‌गद हैं।

●●●

Scanned by CamScanner

देश भर में सर्वाधिक 'पढ़े और सुने' जाने वाले क्रांतिकारी संत

मुनिश्री तरुणसागरजी का पठनीय साहित्य

एक परिचय

1. **दुःख से मुक्ति कैसे मिले**
22 मननीय प्रवचनों का अपूर्व संकलन, जीवन से जुड़ी समस्याओं का सटीक समाधान
मूल्य : 40 रुपये

2. **क्रोध को कैसे जीतें ?**
(हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती व मराठी)
जन-जन की समस्या क्रोध है। हर आदमी क्रोध से परेशान है, पीड़ित है। 'क्रोध को कैसे जीतें ?' पुस्तक क्रोध से मुक्ति दिलाने में पूर्ण समर्थ है। दिल को लुभाने वाली मुनिश्री की विशिष्ट शैली से कृति चर्चित बन पड़ी है।
मूल्य : 15 रुपये

3. **प्रेस-वार्ताएं**
प्रेस-वार्ताएं अपने आप में एक अनूठी पुस्तक है। इन्दौर, भोपाल, कोटा, मेरठ, दिल्ली आदि में आयोजित विशिष्ट वार्ताओं का अपूर्व प्रकाशन।
मूल्य : 25 रुपये

4. **चपल-मन**
दिल और दिमाग को झकझोर देने वाली कविताएं पढ़ने बैठो तो पढ़ते ही जाओ। मुनिश्री की पहली और बहुचर्चित कृति।
मूल्य : 25 रुपये

5. **जैन बाल भारती (भाग 1, 2, 3, 4)**
जैन धर्म के प्रारम्भिक ज्ञान हेतु सर्वश्रेष्ठ बाल प्रकाशन। नई शैली में जैन धर्म के विलिष्ट विषयों की सुन्दरतम प्रस्तुति।
मूल्य : 50 रुपये

6. **मन को कैसे जीएं ?**
मन चंचल है, चपल है, क्यों ? चंचल मन को कैसे रोकें ? इस प्रश्न का त्वरित समाधान प्रस्तुत कृति में मिलेगा।
मूल्य : 15 रुपये

7. **मृत्यु-बोध (बहुचर्चित)** (हिन्दी, अंग्रेजी व मराठी)
जीवन के शाश्वत सत्य 'मृत्यु' पर एक मौलिक कृति जिसका एक-एक वाक्य इतना सरस, मीठा, पवित्र, जीवन्त व ताजगी लिए हुए है कि मन को हर वाक्य पर सोचने को मजबूर कर देगा।
मूल्य : 15 रुपये

8. **मुकुट : जब झुकने लगे** (हिन्दी व मराठी)
23 अगस्त, 1997 को दिल्ली के रामलीला मैदान में भारत सरकार के गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी के मुख्य आतिथ्य में प्रदत्त प्रवचन जिसमें आप पढ़ेंगे कुलकर नाभिराय के जीवन का एक प्रसंग : आपके जीवन के लिए।
मूल्य : 15 रुपये

9. **एक लड़की** (हिन्दी व अंग्रेजी)
मुनिश्री द्वारा 5 जुलाई, 1997 को दिल्ली के ऐतिहासिक परेड ग्राउंड, लाल किला मैदान में दिया गया भ्रूण-हत्या पर एक विशेष प्रवचन। विषय की प्रस्तुति कुछ इस तरह है कि बस पढ़ते जाओ और हँसते जाओ-रोते जाओ।
मूल्य : 15 रुपये

10. **एक था सेठ**
प्रदत्त एक कथा-प्रवचन। जीवन की सच्चाइयों और आध्यात्म की गहराइयों का अपूर्व चिन्तन।
मूल्य : 15 रुपये

11. **क्रान्तिकारी संत**
प्रसिद्ध लेखक श्री सुरेश 'सरल' द्वारा लिखित मुनिश्री तरुणसागर जी की अनुपम और प्रेरणादायक जीवन-गाथा।
मूल्य : 100 रुपये

12. **महावीरोदय** (हिन्दी व अंग्रेजी)
महावीर स्वामी की 2600वीं जन्म-जयंती पर भगवान महावीर के जीवन और दर्शन पर स्फुट सूत्रों का अपूर्व संचयन।
मूल्य : 20 रुपये

13. **मैं सिखाने नहीं, जगाने आया हूँ**
श्री मुकेश नायक (उच्च शिक्षा मंत्री, मध्यप्रदेश शासन) द्वारा सम्पादित। मुनिश्री के भोपाल प्रवास जनवरी, 1994 में 33 जीवनोपयोगी चिन्तनपूर्ण विषयों पर हुए प्रवचनों का सुन्दर प्रकाशन।
मूल्य : 40 रुपये

14. **राष्ट्र के नाम संदेश** (हिन्दी व मराठी)
30 नवम्बर, 1997 को मांस-निर्यात व कत्लखानों के विरोध में आयोजित देशव्यापी अहिंसा सम्मेलन में 1 लाख श्रोताओं के मध्य दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले से मुनिश्री द्वारा राष्ट्र के नाम संदेश। धर्म, समाज व राष्ट्र पर एक ज्योतिर्मय चिन्तन-प्रवचन।
मूल्य : 15 रुपये

15. **तरुणसागर-उवाच**
इन्दौर और मेरठ के विभिन्न स्थानों पर मुनिश्री द्वारा दिये गये अमृत प्रवचनों का सार-संक्षेप।
मूल्य : 25 रुपये

16. **मुझे आपसे कुछ कहना है** (हिन्दी व अंग्रेजी)
इन्दौर में 26 जनवरी, 1995 को राजवाड़ा पर ऐतिहासिक धर्मसभा में मुनिश्री द्वारा दिया गया एक क्रान्तिकारी प्रवचन, जो सिखाता है जीवन जीने की कला।
मूल्य : 15 रुपये

17. **पब्लिक प्रवचन**
जन-साधारण के मध्य दिया गया एक अमृत प्रवचन जो सिखाता है कि जीवन को स्वर्ग कैसे बनायें, तनावों से मुक्त कैसे हों।
मूल्य : 15 रुपये

18. **मैंने सुना है**
पूज्यश्री द्वारा भारत प्रसिद्ध दिगम्बर जैन तीर्थ तिजारा चातुर्मास-2000 में प्रत्येक रविवार को हुए विशेष प्रवचनों का संग्रह।
मूल्य : 50 रुपये

19. **अमृत प्रवचन-माला** (ऑडियो कैसेट्स)
क्रान्तिकारी संत मुनिश्री तरुणसागर जी की अमृतवाणी का 'जी टी.वी.' से विश्व के 122 देशों में प्रसारण। इसी की ऑडियो कैसेटों का सैट। सैट-1 (1-10), सैट-2 (11-20), सैट-3 (20-30)
प्रत्येक सैट : 100 रुपये

20. **21वीं सदी और अहिंसा महाकुंभ**
1 जनवरी, 1999 को विश्वविख्यात 'हर की पौड़ी', हरिद्वार में प्रदत्त एक प्रवचन जिसमें नई सदी में प्रस्तावित अहिंसा महाकुंभ की रूपरेखा तथा मांस निर्यात के विरोध में राष्ट्रव्यापी शंखनाद।
मूल्य : 15 रुपये

21. **क्रान्तिकारी प्रवचन**
(हिन्दी व अंग्रेजी)
25 दिसम्बर, 2000 को जयपुर की ऐतिहासिक बड़ी चौपड़ पर मुनिश्री द्वारा दिया गया एक क्रान्तिकारी उद्बोधन। सबसे हटकर और सबसे बढ़कर।
मूल्य : 15 रुपये

22. **आनंद-यात्रा**
मुनिश्री द्वारा संचालित तनाव-मुक्ति का अभिनव प्रयोग 'आनंद यात्रा की फुहारें।'
मूल्य : 15 रुपये

23. **क्या कहेंगे लोग ?**
20 जुलाई, 2001 को अजमेर के प्रसिद्ध पटेल स्टेडियम में प्रदत्त एक अमृत-प्रवचन।
मूल्य : 15 रुपये

24. **गई भैंस पानी में**
26 दिसम्बर, 01 को श्री राम वाटिका, भीलवाड़ा में आयोजित दिव्य सत्संग महोत्सव में प्रदत्त एक प्रवचन।
मूल्य : 15 रुपये

25. **एक बुढ़िया : जो बचपन में मर गई**
गोरा-बादल स्टेडियम, चित्तौड़गढ़ (राज.) में प्रदत्त एक जीवन्त-प्रवचन।
मूल्य : 15 रुपये

26. **माँ**
17 फरवरी, 2002 को दशहरा मैदान, नीमच (म.प्र.) में प्रदत्त एक क्रान्तिकारी प्रवचन।
मूल्य : 15 रुपये

27. **प्रवचन : वी सी डी**
सैट-1 से 5, 6 से 10, 11 से 15, 16 से 20, 21 से 25 एवं 26 से 30
प्रत्येक सैट का मूल्य : 175 रुपये
सम्पूर्ण सैट का मूल्य : 1050 रुपये

28. **अर्थी सजा के रखना**
10 मार्च, 2002 को पुरानी कृषि उपज मण्डी, मन्दसौर (म.प्र.) में प्रदत्त एक क्रान्तिकारी प्रवचन।
मूल्य : 15 रुपये

Scanned by CamScanner

29. **जीने की कला**
11 अप्रैल से 18 अप्रैल, 2002 तक प्रतापगढ़ (राज.) में आयोजित 'अमृत प्रवचन महोत्सव' में प्रदत्त प्रवचन। मूल्य : 15 रुपये

30. **गुस्सा और जिव**
'धर्मक्षेत्र परिसर' दादाबाड़ी के सामने, जावरा (म.प्र.) में सम्पन्न 'दिव्य सत्संग महोत्सव' (12 से 19 मई, 2002) में प्रदत्त सत्संग प्रवचन। मूल्य : 15 रुपये

31. **आह्वान**
श्रीराम विद्यालय परिसर, सीतामऊ (जि.-मंदसौर, म.प्र.) में आयोजित सत्संग (7 से 11 जून, 2002 तक) में प्रदत्त आह्वान-प्रवचन। मूल्य : 15 रुपये

32. **मुझे गुस्सा बहुत आता है**
रतलाम चातुर्मास-2002 में डॉ. अम्बेडकर मैदान में आयोजित 'संस्कार-महोत्सव' (11 अगस्त से 1 सितम्बर) में प्रदत्त एक संकेतीय-प्रवचन। मूल्य : 15 रुपये

33. **सम्पूर्ण-प्रवचन (भाग 1, 2, 3 व 4)**
क्रान्तिकारी संत द्वारा सन् 1993 से 2004 तक प्रदत्त प्रवचनों का महासंग्रह। 1400 से अधिक पृष्ठों में अब तक प्रकाशित सभी प्रवचन पुस्तकों का समावेश। एक दुर्लभ एवं संग्रहणीय प्रकाशन।
मूल्य : 500 रुपये सैट

34. **कड़वे-प्रवचन भाग 1-2-3-4-5 व 6 (बहुचर्चित)**
(हिन्दी/गुजराती/अंग्रेजी/मराठी/कन्नड/तमिल)
विचार क्रांति में एक नया तहलका मचाने वाली पुस्तक। मुनिश्री की सर्वाधिक चर्चित कृति जिसकी अब तक 6 लाख प्रतियाँ बिक चुकी हैं। मूल्य : 125 रुपये (प्रति भाग)

35. **अहिंसा-महाकुंभ (मासिक पत्रिका)**
मुनिश्री के विचारों की प्रतिनिधि पत्रिका।
आजीवन : 1500 रुपये
त्रैवार्षिक शुल्क : 300 रुपये

36. **कलम के डॉक्टर, मलम के डॉक्टर**
29 मार्च, 2006 को जे.एस.एम. मेडिकल कॉलेज में डॉक्टर्स व मेडिकल के छात्र-छात्राओं के मध्य प्रवचन। मूल्य : 15 रुपये

37. **मस्तकाभिषेक प्रवचन**
श्रवणबेलगोला (कर्ना.) स्थित भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक महोत्सव-06 में प्रमुख वक्ता के रूप में प्रदत्त चुनिंदा प्रवचन। मूल्य : 50 रुपये

38. **शब्दों के शहंशाह**
वरिष्ठ पत्रकार प्रवीण शर्मा (इंदौर) की कलम से श्रवणबेलगोला में भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक महोत्सव-06 में क्रांतिकारी संत की उपस्थिति में वहां जो भी घटा, उसका आँखों देखा हाल।
मूल्य : 70 रुपये

39. **तरुण सागरम**
क्रांतिकारी संत मुनिश्री तरुणसागरजी के जीवन और कृतित्व पर विभिन्न लेखकों, विद्वानों और संत-मुनियों द्वारा लिखे लेखों और विचारों का अपूर्व संकलन। मूल्य : 100 रुपये

40. **क्रांति पथ**
क्रांतिकारी संत मुनिश्री तरुणसागर की क्रांति पथ पर यात्रा का आर्ट पेपर पर A-4 साइज में संपूर्ण बहुरंगीय दस्तावेज।
मूल्य : 100 रुपये

41. **लोक संत लोकोत्तर की ओर**
देश के वरिष्ठ आचार्यों, मुनियों, मनीषियों व साहित्यकारों के अमृत-चिन्तन का संकलन मूल्य : 100 रुपये

42. **प्रबुद्धों के बीच बुद्ध के इशारे**
मुनिश्री तरुणसागरजी द्वारा 24 नवम्बर, 06 को राजभवन (बैंगलोर में) प्रदत्त प्रवचन मूल्य : 20 रुपये

43. **युनिवर्सिटी प्रांगण से...।**
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के दीक्षांत समारोह में मुनिश्री द्वारा प्रदत्त प्रवचन मूल्य : 50 रुपये

44. **खट्टे मीठे तीखे बोल** मूल्य : 50 रुपये

45. **पुलिस सम्बोधन कैसे समझोगे : हिन्ट से या हन्टर से ?**
30 जनवरी, 2009 को नांदेड़ (महा.) में पुलिस अधिकारियों और जवानों के मध्य दिया गया कर्तव्य-प्रवचन मूल्य : 15 रुपये

46. **सेना के नाम संदेश**
60 लाख साधु-संन्यासियों में पहली बार 'भारतीय सेना' को मुनिश्री द्वारा सम्बोधन। मूल्य : 30 रुपये

47. **एम.पी.थ्री**
औरंगाबाद चातुर्मास के प्रवचन मूल्य : 35 रुपये

48. **सत्संग-प्रवचन**
पूज्यश्री द्वारा औरंगाबाद चातुर्मास-08 के पश्चात् नागपुर चातुर्मास-09 के पूर्व कचनेर, जालना, देवलगांवराजा, जिंतूर, बोरी, परभणी, नांदेड़, बसमत, हिंगोली, वाशिम, कारंजा, दारव्हा, यवतमाल, वणी, चन्द्रपुर और हिंगनघाट में आयोजित विराट् सत्संग में दिये प्रवचनों का अभूतपूर्व प्रकाशन। मूल्य : 150 रुपये

49. **तरुण चिंतामणि**
(क्रान्तिकारी राष्ट्रसंत मुनिश्री तरुणसागर जी द्वारा रचित 'क्रान्तिकारी सूत्र' (सिर्फ आठ लाइन) का पद्यानुवाद)
मूल्य : 10 रुपये

50. **संत और संघ**
28 सितम्बर, 2009 को नागपुर के रेशमबाग मैदान में आरएसएस द्वारा विजया-दशमी पर आयोजित मुख्य पथ संचलन में सम्मिलित स्वयं-सेवकों को दिया गया सम्बोधन मूल्य : 10 रुपये

51. **अग्नि परीक्षा**
(पूज्य श्री तरुणसागरजी की अस्वस्थता और आत्मविश्वास का जीवंत व ऐतिहासिक दस्तावेज) मूल्य : 10 रुपये

52. **डी.वी.डी. सेट (5 सी.डी. भाग 1,2,3,4,5)** मूल्य : 250 रुपये
डी.वी.डी. सेट (5 सी.डी. भाग 6,7,8,9,10) मूल्य : 250 रुपये

53. **मुख्यमंत्री निवास प्रवचन**
(26 दिस., 2009 को मुख्यमंत्री निवास (रायपुर) एवं 8 दिस., 2010 को मुख्यमंत्री निवास (भोपाल) पर अतिविशिष्ट लोगों को सम्बोधन प्रवचन) मूल्य : 20 रुपये

54. **चार सपने जो साकार हुए** निःशुल्क

55. **विधान सभा प्रवचन**
(27 जुलाई, 2010 को म.प्र. विधान सभा में प्रदत्त ऐतिहासिक प्रवचन) मूल्य : 30 रुपये

56. **विद्यार्थी**
(स्कूली छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन करती अमूल्य पुस्तक, इस पुस्तक की अब तक 6 लाख प्रतियाँ प्रकाशित) निःशुल्क

57. **डाक्यूमेंट्री फिल्म-1**
(विधानसभा सम्बोधन, सेना सम्बोधन, जन्मभूमि महोत्सव, मुख्यमंत्री निवास सम्बोधन, आदि पर केन्द्रित 5 दुर्लभ डाक्यूमेंट्री फिल्मों का संग्रह) मूल्य : 150 रुपये

58. **डाक्यूमेंट्री फिल्म-2**
(मुनिश्री के विशिष्ट कार्यों पर केन्द्रित 5 दुर्लभ डाक्यूमेंट्री फिल्मों का संग्रह) मूल्य : 150 रुपये

59. **गुरु-पूर्णिमा : सवाल-जवाब** मूल्य : 40 रुपये

आप भी पढ़िये, औरों को भी पढ़वाइए।
अपनी मांग तत्काल भेजें।

साहित्य डाक व वी.पी.पी. द्वारा भेजने की सुविधा उपलब्ध है। डाक शुल्क अतिरिक्त होगा।
मनीऑर्डर या ड्राफ्ट 'अहिंसा महाकुंभ', फरीदाबाद के नाम से देय है।

●

साहित्य मंगाने हेतु सम्पर्क-सूत्र :

अहिंसा महाकुंभ प्रकाशन
196, सेक्टर-18, फरीदाबाद (हरियाणा) * दूरभाष : 0129-2262549

Scanned by CamScanner

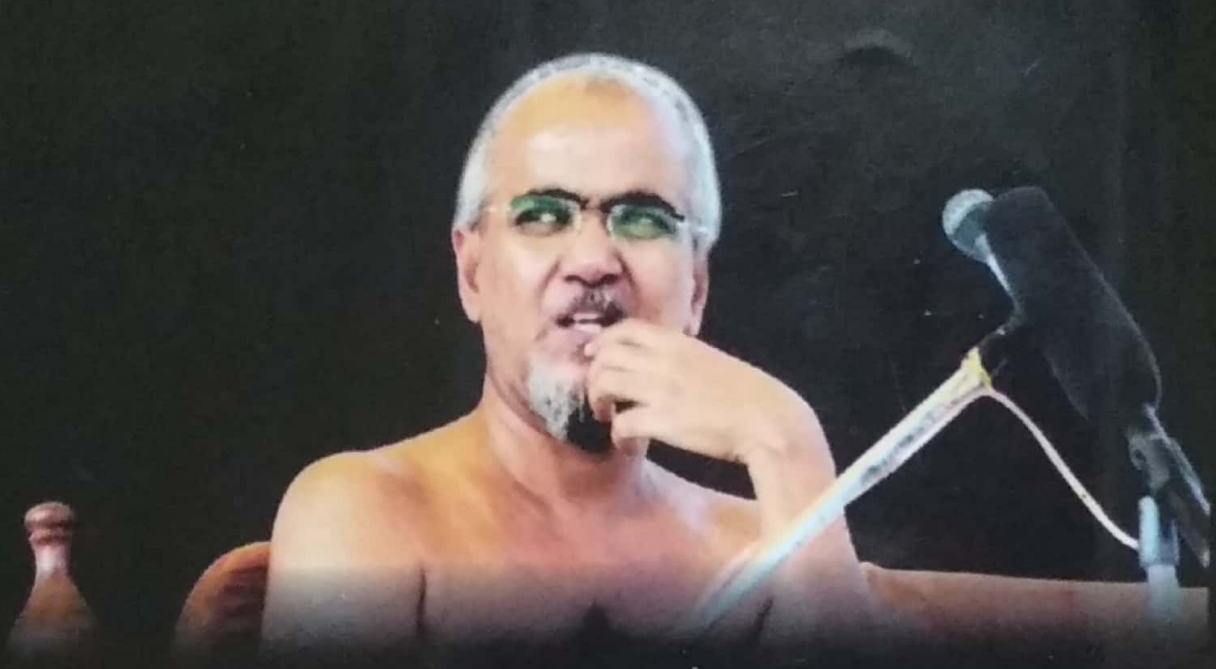

बाप-बेटे की लड़ाई में माँ हमेशा बेटे का पक्ष लेती है। यद्यपि उसका पुत्र की बजाय पति से ज्यादा लगाव होता है।

ठीक इसी तरह बहू-बेटी की लड़ाई में सास को हमेशा बहू का पक्ष लेना चाहिये, जो सास बहू का 'पक्ष' लेती है, फ़िर उसे कभी 'विपक्ष' में नहीं बैठना पड़ता, मतलब हमेशा सरकार उसकी ही रहती है।

कुछ न होकर भी उसकी ही चलती है, मेरा मानना है कि जो सास बहू का पक्ष लेती है उसे भगवान के 'समक्ष' रक्ष-रक्ष जपने की जरूरत नहीं पड़ती और बंद 'कक्ष' में बैठकर आँसू भी नहीं बहाने पड़ते हैं।

* मुनिश्री की शीघ्र प्रकाश्य
'कड़वे प्रवचन' भाग-6 से

Scanned by CamScanner